संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो... मैं आपको अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से अभिवादन करती हूं।

प्रभु करे की शांति का परमेश्वर आप को पूरी तरह पवित्र करे, और प्रभु करे की आपके पूर्ण प्राण, आत्मा और देह परमेश्वर यीशु मसीह के आने पर निर्दोष हो।

1 थिस्सलुनिकियों की पुस्तक में यीशु के दूसरे आगमन के बारे में लिखा है। हम अंत समय में रह रहे हैं और अनुग्रह का दरवाजा किसी भी समय बंद हो सकता है। एक तरफ, यह प्रभु का आने का समय है, दूसरी तरफ दुनिया का क्रूर अत्याचार मसीही विरोधी है, जो बहुत महान होगा। साथ ही, आत्मा और दुल्हन कहते हैं ''आ'' और सुनने वाले आओ। और जो प्यासे हैं आएं। जो भी इच्छा करता है, उस जीवन के पानी में से स्वतंत्र रूप से ले ले।

जो समय प्रभु ने हमें अब दिया है, हमें उसके सामने पूर्णता में चलना चाहिए। इब्रानियों 6: 1,2 ''1 इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। 2 और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें।''

इसलिए आपका सिद्ध होना जरुरी है, जैसे स्वर्ग में आपका पिता सिद्ध है। मत्ती 5:48 ''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।''

हमें पवित्र कौन कर सकता है? शांति का राजकुमार अर्थात यीशु मसीह हमें पवित्र बना सकता है। वह शांति के राजकुमार हैं। यशायाह 9:6 ''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।''

जब यीशु इस पृथ्वी पर पैदा हुए थे, तो स्वर्गदूतों ने गाया था लूका 2:14 ''कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।''

मनुष्य को तीन प्रकार की शांति की जरूरत है

1) प्रभु के साथ शांति

2) खुद के साथ शांति

3) सभी मनुष्यों के साथ शांति

परन्तु हमारी आत्मा में, पाप हमारी शांति को नष्ट करता है। यशायाह 57:21 ''दुष्टों के लिए शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है।''

यीशु मसीह कलवारी के क्रूस पर मरे ताकि मनुष्य को परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप हो सके और पापी मनुष्य को पवित्र बना सके। इफिसियों 2:14–16 ''14 क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। 15 और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। 16 और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दानों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।''

परन्तु अब पाप से मुक्त होकर, और परमेश्वर के दास बन गए, तो आपका फल पवित्र है, और अंत में, अनन्त जीवन।

जैसा कि हम अंत के समय की ओर आ रहे हैं, आइए हम अपने आप को अपने सभी पापों से शुद्ध करें और अपने शरीर, प्राण और आत्मा को यहोवा के हाथों में दे दें। 2 कुरिन्थियों 7:1 ''सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने

आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।''

हमारे प्रभु का आगमन बहुत निकट है, इसलिए हमें अपने आप को पवित्र होने के लिए तैयार करना चाहिए। उस पर विश्वास करो। यिर्मयाह 17:7, 8 ''7 धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। 8 वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।''

हे मेरे प्रियजनों, अपनी आँखें प्रभु पर रखो और उन्हें आपको नेतृत्व करने दो और उनके आत्मा के साथ आपको भरें। पूरी तरह से प्रभु को आत्मसमर्पण करो। रोमियो 12:12 ''आशा मे आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो; प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।'' क्योंकि परमेश्वर आत्मा है, इसलिए हम उसे जानते हैं और हमारी आत्मा में उससे बात कर सकते हैं। इस प्रकार हम आत्मा में प्रभु की आराधना कर सकते हैं। यूहन्ना 4:24 ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।''

प्रभु की आत्मा आपको एकता में रखें और आने वाले दिनों में आप सभी को आशीर्वाद मिले जब तक कि हम फिर से मिले।

प्रभु की सेवा में,

पास्टर सरोजा म.

प्रभु की आज्ञा मानना आशीर्वाद लाता है!

उत्पत्ति 26:2 ''वहां यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह।'' प्रभु ने इसहाक को क्यों आशीष दिया था ? प्रभु इसहाक को उसकी आज्ञा मानने के कारण आशीर्वाद दिया था। जब इजराइल में अकाल हुआ, तो सभी लोग इसराइल से मिस्र में भाग गए। प्रभु इसहाक के सामने प्रकट हुए और उससे कहा ''मिस्र में मत जाओ, लेकिन इस देश में रहना जारी रखो और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा''। आइए पढ़ते है उत्पत्ति 26:1–3 ''1 और उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहिले अकाल से अलग था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था। सो इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। 2 वहां यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह। 3 तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूंगा, और तुझे आशीष दूंगा; और ये सब देश मैं तुझ को, और तेरे वंश को दूंगा; और जो शपथ मैं ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूंगा।'' इस प्रकार प्रभु ने इसहाक को सौ गुना आशीर्वाद दिया। हम देखते हैं कि इस्राएल में स्थिति अनुकूल नहीं थी क्योंकि वहां अकाल था और लोग इसहाक के समर्थन में नहीं थे, इस प्रकार उसने इन समयों के दौरान बहुत से विरोध का सामना किया। प्रेरितों के काम 5:32 ''और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं।'' जो प्रभु परमेश्वर के आज्ञाकारी हैं, वह उन्हें आशीर्वाद देता है। अकाल की स्थिति में इसहाक का समर्थन करने वाला कोई भी नहीं था, लोगों ने देश छोड़ दिया और भाग गए। इसहाक को किसी भी तरह का समर्थन नहीं मिला क्योंकि उनके दिलों में लोगों ने कुड़कुड़ाना और बड़बड़ाना शुरू कर दिया था। इस प्रकार, यह केवल इसहाक की आज्ञापालन से प्रभु के आदेश पर ही वह बहुत्तायत से आशीषित हुआ। प्रभु ने इसहाक से कहा, ''जो लोग इस देश को छोड़ना चाहते हैं, चले जाएं, लेकिन तुम इस देश को नहीं

छोड़ना। मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को आशीर्वाद दूंगा। मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और आशीर्वाद दूंगा।'' इस प्रकार इसहाक ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, जैसे एक बच्चा अपने पिता का पालन करता है, और वह धन्य था।

जब यीशु मसीह ने स्वर्ग छोड़ कर इस संसार में आए, तो उसने इस धरती पर अपने पिता परमेश्वर के लिए हर वचन को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा के हाथों में खुद को सौंप दिया। फिलिप्पियों 2:8–9 ''8 और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। 9 इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।'' इस प्रकार पिता परमेश्वर ने अपने बेटे को ऊंचा किया और इस दुनिया में सभी नामों के ऊपर उनका नाम बनाया। इसहाक एक बहुत मेहनती और तेजी से कार्यकर्ता था, उसने अपने हाथ में दिए गए किसी भी काम को पूरा करने में कभी देरी नहीं की। वह एक चरवाहा था, वह एक किसान था और उसने अपने सारे पिता के समय में बंद किए गए सभी कुओं को फिर से बनाया था। उसने कभी भी किसी चीज के बारे में कुड़कुड़ाना नहीं किया। उसके पास देखभाल करने के लिए बहुत सारी भेड़े थीं और जब वह इस से गुजर रहा था, तो उसने खेतों में काम किया और इस प्रकार बहुत फसल काट लिया। इसके अलावा, उसने सभी कुओं को फिर से खोला, जो अपने पिता के समय अमालेकियों ने भरा था। आइए पढ़ते है उत्पत्ति 26:12–31 ''12 फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया, और यहोवा ने उसको आशीष दी। 13 और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहां तक कि वह अति महान पुरूष हो गया। 14 जब उसके भेड़–बकरी, गाय–बैल, और बहुत से दास–दासियां हुई, तब पलिश्ती उससे डाह करने लगे। 15 सो जितने कुओं को उसके पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था, उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। 16 तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है। 17 सो इसहाक वहां से चला गया, और गरार के नाले में तम्बू खड़ा करके वहां रहने लगा। 18 तब जो कुएं उसके पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गए थे, और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों ने भर दिए थे, उन को इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। 19 फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला। 20 तब गरारी

चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, कि यह जल हमारा है। सो उसने उस कुएं का नाम एसेक रखा इसलिए कि वे उससे झगड़े थे। 21 फिर उन्होंने दूसरा कुआं खोदा; और उन्होंने उसके लिए भी झगड़ा किया, सो उसने उसका नाम सित्रा रखा। 22 तब उसने वहां से कूच करके एक और कुआं खुदवाया; और उसके लिए उन्होंने झगड़ा न किया; सो उसने उसका नाम यह कह कर रहोबोत रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिए बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूलें–फलेंगे। 23 वहां से वह बेर्शेबा को गया। 24 और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और अपने दास इब्राहीम के कारण तुझे आशीष दूंगा, और तेरा वंश बढ़ाऊंगा 25 तब उसने वहां एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहां इसहाक के दासों ने एक कुआं खोदा। 26 तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग ले कर, गरार से उसके पास गया। 27 इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो? 28 उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है: सो हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं; 29 कि जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा। 30 तब उसने उनकी जेवनार की, और उन्होंने खाया पिया। 31 बिहान को उन सभों ने तड़के उठ कर आपस में शपथ खाई; तब इसहाक ने उन को विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए।'' इसहाक ने परमेश्वर के हर आदेश का पालन किया इस प्रकार वह इस दुनिया में सफल और समृद्ध हुआ। वचन 16. ''तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।'' हमने हमेशा देखा है, आत्मा और मांस से पैदा हुए लोगों के बीच विरोध हमेशा होता है ..जैसे की इस्माइल और इसहाक। लेकिन इसहाक हमेशा एक मुस्कान के साथ सभी समस्याओं को हस्सी में उड़ा देता और खुद के भीतर शांति होती था। यहां हम देखते हैं कि अमालेकियों को एहसास हुआ कि जहां कहीं इसहाक अपने हाथ रखता था, उसने परमेश्वर से बहुत आशीर्वाद प्राप्त किया। इन आशीषों का कारण क्या था? क्योंकि इसहाक ने अपने जीवन की हर स्थिति में प्रभु का पालन किया। वचन 26 ''तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल

को संग ले कर, गरार से उसके पास गया।'' अमालेकियों ने एक बार इसहाक को देश छोड़ने के लिए कहा था, अब तो उसे वापस रहने के लिए कहते है। वचन 27–28 ''27 इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो? 28 उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है: सो हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं;'' इसहाक के विरूद्ध अमालेकियों ने इसहाक पर परमेश्वर का हाथ और उसकी कृपा और आशीर्वाद देखा था। वे एक बार फिर इसहाक के साथ हाथ मिलाना चाहते थे। इसहाक का अर्थ 'हँसी और शांति' है, इस प्रकार इसहाक हमेशा खुद को खुश और हमेशा अपने साथ और उसके चारों ओर से शांति में रहता था। इस प्रकार, हम यह देखते हैं कि जब हम परमेश्वर का पालन करते हैं, तो उनका आशीर्वाद हमारे ऊपर बहुत हैं, हमारे चारों ओर के लोग भी देखेंगे और उसी की प्रशंसा करेंगे।

प्रभु ने हमें प्रेम दिया, आशीर्वाद और नए जीवन को कभी नहीं भूलना चाहिए। अधिकतर परिवारों में हमने देखा है कि पति नबाल की तरह हैं और इब्राहीम की तरह नहीं। लेकिन प्रभु चाहते है कि महिलाओं को अबीगैल की तरह, बुद्धिमान और होशियार होना चाहिए, ताकि उनके परिवारों को प्रभु की दया और अनुग्रह प्राप्त हो। हम कल के बारे में नहीं जानते हैं, की भविष्य में हमारी जिंदगी में क्या रखा है, लेकिन सत्य और न्याय में हमारी जिंदगी जीना महत्वपूर्ण है। आइए हम फिर से पढ़ते है उत्पत्ति 26:12–16 ''12 फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया: और यहोवा ने उसको आशीष दी। 13 और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहां तक कि वह अति महान पुरूष हो गया। 14 जब उसके भेड़–बकरी, गाय–बैल, और बहुत से दास–दासियां हुई, तब पलिश्ती उससे डाह करने लगे। 15 सो जितने कुओं को उसके पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था, उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। 16 तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।'' वचन 26–30 ''26 तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग ले कर, गरार से उसके पास गया। 27 इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो? 28 उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है: सो हम ने सोचा, कि

तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं; 29 कि जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा। 30 तब उसने उनकी जेवनार की, और उन्होंने खाया पिया।'' अमालेकियों ने इसहाक के जीवन में इतना दुख और दर्द लाए थे, फिर भी उसने उनके बारे में कुछ गलत नहीं सोचा। उसने खुशी से अपना काम किया और उसने अपने काम में जो भी काम किया था, उसे पूरी तरह से अपनाया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया। भजन संहिता 126 : 5–6 ''5 जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। 6 चाहे बोने वाला बीज ले कर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।'' हमें भी कभी भी गुरगुरावट नहीं करना चाहिए, परन्तु परमेश्वर के कामों को पूरा करना में हमें हमारे दिल में आनन्दित होना चाहिए। जब हम सोचते हैं कि हम प्रभु के लिए काम कर रहे हैं, हम अपने दिल में कभी गुरगुरावट या बड़बड़ नहीं करेंगे। भजन संहिता 128 : 2 ''तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।'' दिल में बड़बड़ाने के साथ कोई काम नहीं किया जा सकता, उससे फल की प्राप्ति नहीं होती। बल्कि जब हम प्रभु का काम खुशी से पूरा करते हैं, तो वह हमें बेहद आशीष देगा। यह हमें हमेशा याद रखना चाहिए। सभोपदेशक 11 : 6 '' प्रातःकाल को अपना बीज बो, और सन्ध्या समय भी अपने हाथ ढीले मत कर, क्योंकि तू नहीं जानता की इस समय की या उस समय की बोआई सफल होगी, अथवा दोनों समय की समान रूप से अच्छी होगी।'' हमारे दिल में कई योजनाएं हो सकती हैं, लेकिन याद रखिए कि प्रभु की कृपा हमारे लिए होनी चाहिए, कि हमारी योजनाएं फलदायक हो सके। नीतिवचन 21 : 31 ''युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।'' हम कई चीजों की योजना बना सकते हैं, हम बहुत तैयारी कर सकते हैं, लेकिन हमारी जीत केवल प्रभु परमेश्वर से ही है। हम जो बोते हैं, काटने के लिए, हमारे पास प्रभु का अनुग्रह होना चाहिए। हां, इस दुनिया में शांति फैलाने के लिए, यीशु मसीह इस दुनिया में आए थे। परमेश्वर के स्वर्गदूत मनुष्यों के सामने प्रकट हुए और कहा लूका 2 : 14 ''कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।'' प्रभु परमेश्वर ने हमारे दिल में शांति के बीज डाल दिए हैं, इन बीजों को फलदायक होना चाहिए। इफिसियों 4 : 3 ''और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न

करो।'' हमारे प्रभु ने हमें अपनी आत्मा में एकजुट किया है और हमें शांति से बांधा हुआ है। हमारे कामों में से कोई भी हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता है, जैसे कि हमारी लापरवाही, गर्व, अहंकार, ईर्ष्या, प्रभु के रास्ते में नहीं आना चाहिए और हम स्वयं। प्रभु ने हमें उसके साथ एकता में रखने के लिए हमारे पास अपनी आत्मा रखी है। रोमियो 16 : 20 ''शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।'' शांति के प्रभु, उसके पैरों के नीचे शत्रु को कुचल देगा, जब परमेश्वर की कृपा हमारे ऊपर होगी। क्योंकि, यह कलवारी के क्रूस पर है कि यीशु मसीह ने क्रूस पर, छह घंटे तक बुराई को कुचल दिया था। इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह हमेशा हमारे साथ रहना चाहिए। मिस्र में, फिरौन ने सभी नवजात नर बच्चों को नष्ट करने का आदेश दिया था। लेकिन यह केवल प्रभु का अनुग्रह था कि मिस्र की दाइयों ने उन सभी को नहीं मारा, लेकिन फिरौन को एक बहाना दिया। हमारे जीवन पर प्रभु की कृपा, दयालुता और करुणा पाने के लिए हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि महान क्रोध में फिरौन ने, दाइयों से कहा था कि वे सभी नए जन्मजात नर बच्चों को मार डालें। प्रभु की कृपा इन इस्राएली महिलाओं पर थी, उन्हें दाइयों की आंखों में अनुग्रह मिला। आइए हम पढ़ते हैं निर्गमन 1 : 16–19 ''16 कि जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय जन्मने के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो, तो उसे मार डालना; और बेटी हो, तो जीवित रहने देना। 17 परन्तु वे दाइयों परमेश्वर का भय मानती थीं, इस लिए मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थीं। 18 तब मिस्र के राजा ने उन को बुलवाकर पूछा, तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो? 19 दाइयों ने फिरौन को उतर दिया, कि इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि दाइयों के पहुंचने से पहिले ही उन को बच्चा उत्पन्न हो जाता है।'' बदले में दाइयों ने फिरौन को बताया कि मिस्र की महिलाएं बहुत सक्रिय और स्वतंत्र थीं। इस प्रकार, जब तक कि दाईयां उन तक पहुंचने पाए उस से पहले ही वे बच्चे उत्पन्न कर देती थीं। लेकिन फिरौन, का क्रोध बढ़ता गया, हम पढ़ते हैं निर्गमन 1 : 21–22 ''21 और धाइयां इसलिए कि वे परमेश्वर का भय मानती थीं उसने उनके घर बसाए। 22 तब फिरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना।'' हां, इसके बाद भी, प्रभु यहोवा की कृपा और अनुग्रह मूसा पर बहुतायत से थी और परमेश्वर ने

फिरौन की बेटी को मूसा को बचाने के लिए तैयार किया था। एक फुटबॉल के खेल में, हमने देखा है, जब एक खिलाड़ी गलत खेलता है या जानबूझकर दूसरे खिलाड़ी को चोट पहुंचाता है, तो उसे एक लाल कार्ड दिखाया जाता है और उसे अयोग्य घोषित किया जाता है, उसे तुरंत मैदान छोड़ना पड़ता है। परन्तु जब हम प्रभु के विरुद्ध गलती करते हैं तो हम अपने पर सीधे उनका कोप या क्रोध को नहीं देख सकते क्योंकि हम आत्मारिक रूप से अंधे हैं और इस प्रकार हम अपने जीवन को सुधारने के लिए या परिवर्तन करने के लिए परेशानी नहीं उठाते हैं, इस प्रकार हम बुरे मार्ग में चलना जारी रहतें हैं। हम पवित्र शास्त्र में जानते हैं कि जब दुश्मनों ने पहाड़ों पर नबी एलीशा को घेर लिया था, तो एलीशा दुश्मनों के आसपास आग के रथों को देख सकता था, परन्तु उसका दास गेहजिया को ऐसा नहीं दिखा क्योंकि वह आत्मारिक रूप से अंधा था। आज भी, हम केवल इस दुनिया के नियमों और व्यवस्थापन को देख सकते हैं, इसलिए हम उन्हें डरते हुए मानते हैं। लेकिन प्रभु का कानून हम पालन नहीं करते हैं, क्योंकि हम प्रभु को नहीं देख सकते हैं इसलिए हम उस से नहीं डरते। हम आत्मारिक रूप से अंधे हैं। हमारी आत्मारिक आंखों से देखना बहुत महत्वपूर्ण है। याद रखें, हर साल प्रभु परमेश्वर हमारी सभा को भी छानता है ! इस प्रकार परमेश्वर के नियमों का पालन करना और उसके सामने अपने जीवन को भयभीत से जीना महत्वपूर्ण है। हमें अपने जीवन में दी जाने वाले उनके प्यार को कभी फायदा नहीं उठाना चाहिए। चलो पढ़ते है निर्गमन 2 : 1–10 ''1 लेवी के घराने के एक पुरूष ने एक लेवी वंश की स्त्री को ब्याह लिया। 2 और वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। 3 और जब वह उसे और छिपा न सकी तब उसके लिए सरकंड़ों की एक टोकरी ले कर, उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाकर, उस में बालक को रखकर नील नदी के तीर पर कांसों के बीच छोड़ आई। 4 उस बालक कि बहिन दूर खड़ी रही, कि देखे इसका क्या हाल होगा। 5 तब फिरौन की बेटी नहाने के लिए नदी के तीर आई; उसकी सखियां नदी के तीर तीर टहलने लगीं; तब उसने कांसों के बीच टोकरी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिए भेजा। 6 तब उसने उसे खोल कर देखा, कि एक रोता हुआ बालक है; तब उसे तरस आया और उसने कहा, यह तो किसी इब्री का बालक होगा। 7 तब बालक की बहिन ने फिरौन की बेटी से कहा, क्या मैं जा कर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं जो तेरे लिए बालक को दूध पिलाया करे? 8 फिरौन की बेटी ने कहा,

जा। तब लड़की जा कर बालक की माता को बुला ले आई। 9 फिरौन की बेटी ने उससे कहा, तू इस बालक को ले जा कर मेरे लिए दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूंगी। तब वह स्त्री बालक को ले जा कर दूध पिलाने लगी। 10 जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहराय और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, कि मैं ने इस को जल से निकाल लिया।'' यहां हम देखते हैं कि फिरौन ने नए जन्मजात नर बच्चों को मारने की कितनी ही योजना बनाई थीं। परन्तु हमारा प्रभु परमेश्वर शक्तिशाली है, उसने मूसा को बचाने के लिए फिरौन की बेटी तैयार की, जो भविष्य में सभी इस्राएलियों को बचाएगा और उन्हें बंधन से निकाल देगा। हमारे जीवन में भी, हमारे परिवारों में भी, प्रभु की कृपा प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार हमें परमेश्वर के वचन और कानून के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए। जैसे इसहाक प्रभु के वचन के प्रति आज्ञाकारी था, वह अकाल के समय में इजराइल में रहा और देश नहीं छोड़ा। हमने देखा है कि कैसे प्रभु परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया और उसे समृद्ध और सौ गुना सफल किया। अमालेकियों, इस्राएलियों के महान दुश्मन, यह देखा और आश्चर्य किया, इस प्रकार वे आगे आए और इसहाक के साथ दोस्त बन गए। हमारे लिए यह याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रभु 'शांति' फैलाने के लिए इस दुनिया में आए थे। उन्होंने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन दिया। अगर हम इस महान बलिदान का एहसास नहीं करते हैं, तो हमारा जीवन व्यर्थ और बेकार है। इस प्रकार, आज, हम अपने जीवन पर विचार करें। अगर हम अपनी जिंदगी प्रभु के लिए नहीं जीते हैं और उसके आदेश की आज्ञाकारिता में नहीं रहते हैं, तो हम किसके लिए योग्य हैं? हमारा जीवन बहुत छोटा है और इसकी कोई गारंटी नहीं है, आज हम जीवित हैं, लेकिन कल प्रभु ही जानता है? इस दुनिया में हमारे जीवन को नष्ट न करें, परन्तु हमें इस पृथ्वी पर अपनी जिंदगी जीने के लिए अकेले उसके आदेशों की आज्ञा मानने में रहना चाहिए। प्रार्थना करें कि यह संदेश हमारे प्रत्येक जीवन में एक आशीर्वाद हो!

प्रभु की सेवा में,

पास्टर सरोजा म.